नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... दिनांक : 14-09-2019

प्रकाशनार्थ

(हिन्दी दिवस पर आयोजित हुआ कार्यक्रम)

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में हिन्दी विभाग के तत्वावधान में **हिन्दी दिवस** के अवसर पर बोलते हुए प्रतिष्ठित सहित्यकार एवं सतीश्चन्द्र पी.जी. कालेज, बलिया के पूर्व आचार्य **डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी** ने कहा कि **भाषण से नहीं भाव से समृद्ध होगी हिन्दी।** राजभाषा से राष्ट्रभाषा की यात्रा के लिए सत्ता पक्ष का दृढ़ संकल्पित होना अत्यन्त आवश्यक है। हिन्दी को अंग्रेजी से नहीं, अंग्रेजियत से स्वतंत्रता के समय से ही खतरा रहा है। दुनिया की दूसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा स्वयं अपने देश के ऐसे चौराहे पर खड़ी है जहाँ उसे आमजन और सत्ता पक्ष का सहयोग अत्यन्त आवश्यक है। भारत दुनिया के महत्वपूर्ण देशों में से अकेला ऐसा देश है जिसकी अपनी कोई राष्ट्रभाषा नहीं है। राष्ट्र और राष्ट्रीयता के लिए राष्ट्रभाषा की भूमिका को लेकर भारत के ऋषि परम्परा से लेकर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तक सजग थे। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी भाषा को राष्ट्रीय एकता के लिए एक शस्त्र के रूप में प्रयोग किया गया। हिन्दी अपने विराट और समृद्ध स्वरूप के बावजूद स्वतंत्र भारत में राजनीति का शिकार हो गई।

डॉ. द्विवेदी ने आगे कहा कि हिन्दी केवल भाषा ही नहीं बल्कि भारत के आत्मा की अभिव्यक्ति है। हिन्दी हमारे संस्कार की भाषा है। बगैर राष्ट्र भाषा के राष्ट्र गूंगा होता है, दुर्भाग्य से भारत की आज तक अपनी कोई राष्ट्रभाषा नहीं बन पायी है। गोस्वामी तुलसीदास, मुंशी प्रेमचन्द्र से लेकर राम मनोहर लोहिया जैसे तमाम राष्ट्र भक्तों द्वारा हिन्दी को समृद्ध एवं प्रतिष्ठित करने का अथक प्रयास के बावजूद हिन्दी को वह सम्मान प्राप्त नहीं हो पाया जो सम्मान उसे प्राप्त होना चाहिए। वास्तव में हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाकर हिन्दी का सम्मान नहीं बल्कि सवा सौ करोड़ देशवासियों का सम्मान होगा। आज भारत के बाहर हिन्दी भाषा भाषी लोग जिस प्रकार से उसे गौरवान्वित कर रहे है वह प्रत्येक भारतवासी के लिए अनुकरणीय है और एक स्पष्ट संदेश भी दे रहा है। उन्होंने आगे कहा कि हिन्दी भारत के हृदय देश की कुन्जी है। हिन्दी में ही सारा भारत बोलता है। आजादी के समय हमारे नीति–नियन्ताओं में आत्मविश्वास की कमी थी अतः 1966 तक हिन्दी राष्ट्रभाषा बनने से रोक दी गई और आज तक 1966 नहीं आया। अपनी भाषा से कटने के कारण स्मृतिलोप एवं आत्मनिर्वासन की ओर हम बढ़ चलते हैं। हिन्दी बाजार की भाषा बने किन्तु बाजारू भाषा न बने। हिन्दी ज्ञान के सभी अनुशासनों की भाषा बनें। भाषा संस्कृति की बुनियाद है। भाषा सभ्यता और संस्कृति को वाणी देती है। अपनी भाषा से कटने वाला समाज अपनी संस्कृति अपनी परम्परा से कट जाता है।

कार्यक्रम में प्रस्ताविकी डॉ. आरती सिंह ने तथा आभार ज्ञापन डॉ. सुधा शुक्ला ने किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत, सरस्वती वन्दना एवं ईश वन्दना के साथ हुआ। इस अवसर पर महाविद्यालय के शिक्षक कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

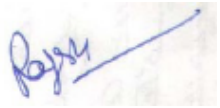

(डॉ. राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी